एक विचार आप सब के लिए

पत्रकारिता के लिए यह समय बड़ा चुनौतीपूर्ण है। यह समय उसकी पहचान, उसके मूल्य, भूमिका और उसके दर्शन को निजी लोगों से स्वीकार कराने के लिए है। उसके अनुसंधान का आधार और वातावरण बनाने के लिए कुछ सार्थक करने का है। उसे विशेष और विशेषज्ञ बनने में आ रही कमजोरियों को दूर करने का भी है। उसे एक अकादमिक अनुशासन के रूप में विकसित करने और उसके सम्प्रेषण को अनुसंधान प्रक्रिया का निष्कर्ष बताने का है। दो सौ से अधिक वर्षों से जो वृत्ति या प्रोफेशन प्रभावकारी ढंग से काम कर रहा हो और जिसका फैलाव दुनिया भर में हो, उसे हड़बड़ी या गैर जिम्मेदार कहे जाने से बाहर लाने का समय है।

एक तरफ तो अब वह व्यवसाय के स्वरूप में प्रतिष्ठित हो रहा है या कह सकते हैं, हो गया है। सामान्यत: प्रबंधन और व्यवसाय से जुड़े लोग तो यह मान ही रहे हैं कि वह सूचना, विचार तथा प्रचार का व्यवसाय है। अब तक समाचार को प्रचार से परे रखा गया था पर पिछले कुछ चुनावों के बाद से पेड न्यूज तथा प्रचार-समाचार आय के ही माध्यम बने हैं। यह बात अब विचार के क्षेत्र में भी दाखिल हो गई है। भेंटवार्ताएं, प्रायोजक मंतव्य तथा जानकारियां तथा रोपित विचारों को अब पृथक कर पाना दूध से पानी अलग करना जैसा ही हो गया है। नीरा राडिया टेप ने इस मिथ को तथ्य में बदल दिया है। अब लगभग हर प्रदेश में नीरा राडिया लक्षण मौजूद हैं और लगातार फलफूल रहे हैं। इसके लिए केवल व्यवसायी दोषी नहीं है। इस सब के लिए राज्य और केन्द्र की सरकारें उन व्यवसायियों से कहीं अधिक दोषी हैं।

इसी के समानांतर, मीडिया को अब भी उस बरतानवी मुहावरे, फोर्थ स्टेट, के विशेषण से संबोधित किया जाता है। लगभग सभी विमर्शों में उससे सामाजिक सरोकारों और मानवीय मूल्यों का पक्ष लेने का आग्रह किया जाता है और उसे याद दिलाया जाता है कि उसका अतीत इस मायने में कितना गौरवशाली रहा है। उससे कहा जाता है कि उसे तो जनहित का पक्ष रखते हुए लोकतंत्र में विपक्ष की भूमिका का निर्वाह करना चाहिये। उसका का ध्येय ही सेवा माना जाता है। साथ ही यह चाहते हैं उसे समाज में जो कुछ घट रहा है उसका यथा तथ्य विवरण जल्दी से जल्दी प्रस्तुत करना चाहिये। उसका यह विवरण समग्र और सम्पूर्ण हो, इत्यादि। यानी वह समाज का पहरूआ है और लोक आकांक्षा के लिए काम करने वाली एक उत्तरदायी इकाई है।

मीडिया को उसकी अपनी नजर, रूचि और रूझान या झुकाव से भी बचने की सलाह कम से कम पचास वर्षों से तो मिल ही रही है। कहा यह जाता है कि वह किसी एक के पाले में खड़ा न हो। वह सभी से बात करे और सभी का पक्ष रखे। इस हद तक हि वह सच को जानता हो तब भी उसे सच को छुपाने वाले का पक्ष भी लेना चाहिये। उसे एक ऐसा मंच भी कहा जाता है जहां सभी अपनी बात कह सकते हैं। एक तरह वह सभी की बातों, विचारों, जानकारियों, सूचनाओं, विज्ञापनों का मंच है, जिसमें एक वह भी है। अपनी बात जोर से कहने के बजाय धीमे स्वर और स्पष्ट आग्रह से कहना अधिक अच्छा होता है, ऐसा उससे कहा जाता रहा है।

यह सब करते हुए उसे अपना वित्त पोषण भी स्वयं करना है। उससे सहज और आसान पहुंच के लिए अपनी विक्रय कीमत अपनी उत्पादन लागत से भी कम रखने की एक समय बनी परम्परा को कायम रखने की अपेक्षा रखी जाती है। उसे सरकार, वित्तीय संस्थान, व्यापारी प्रतिष्ठान तथा निजी लोगों से दान, अनुदान या प्रतिदान लेने की मनाही तो नहीं है, पर ऐसा करना उसकी साख तथा प्रामाणिकता के लिए हानिकारक बताया जाता है। उसका उपयोगकर्ता भी उसे अन्य विकल्पों से सस्ता मानकर ही उपयोग करता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उपयोगकर्ता भी उसके उपयोग के लिए सीधे उसे कुछ शुल्क आदि नहीं देता है। यह बाजार या ग्राहक दोनों पर लागू है। न तो ग्राहक उसे उसकी विशेषता या विशेषज्ञता के लिए वित्त पोषण करता है और न ही बाजार या व्यवसाय उसे उसका सूचना हरकारा बनने के लिए कुछ अतिरिक्त देता है। उसे अपनी मजबूती के लिए स्वयं ही रास्ते तलाशने की सलाह कानून और नियमों तथा नीतियों की लागू परिधियों को ध्यान में रखते हुए दी जाती है।

यह सब है और इसे हम सब जानते हैं। मजे की बात यह है इस सबके बावजूद उसे साहित्य और दर्शन दोनों में दोयम दर्जे की नागरिकता मिली हुई है। उसकी जानकारियों को समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, न्याय या विधि के अधिकारी डिपेंडेबल यानी जिन पर निर्भर रहा जा सके, ऐसा नहीं मानते हैं। एक अतिरिक्त जानकारी जिसे जांचकर देखा जा सकता है, ऐसी उसकी उपस्थिति मानी जाती है। पत्रकारिता को संचार का ही अंग माना जाता है। उसका अपना दर्शन और कौशल है। उसकी प्रक्रिया अनुसंधान सृजित है और उसपर निर्भर रहा जा सकता है। वह व्यक्ति और समाजोपयोगी माना जाता है। पत्रकारिता को संचार का ही एक छोटा कमरा माना जाता है। ऐसा केवल भारत की पत्रकारिता को लेकर नहीं है। पूरी दुनिया में पत्रकारिता के संबंध में यही बात है।

भारत में पत्रकारिता को 150 से अधिक वर्ष हो चुके हैं। यूरो-अमेरिका को मिलाकर लगभग 250 वर्षों से अधिक समय हो गया है। पत्रकारिता के अब तो कई स्वरूप व्यवहार में आ रहे हैं। वह एक कौशलपूर्ण सम्प्रेषण है जिसका केन्द्र व्यक्ति और समाज का कल्याण है। सत्य और तथ्य उसके आधार सिध्दांत हैं जिन पर उसकी पूरी इमारत खड़ी है। वह समाज और व्यक्ति को अपने समय से

अवगत ही नहीं कराती वरन उसपर विमर्श का अवसर भी देती है। उसके अपने मूल्य हैं और उसके मूल्य मानवीयता, सामाजिक सरोकार और समावेशी विकास के साथ संगति रखते हैं। पर यह कहना ठीक होगा कि उसके इस दर्शन के बारे में कहीं भी गंभीरता से विमर्श नहीं किया गया। इसका आशय यह नहीं है कि उसका कोई दर्शन या सिध्दांत नहीं है। संचार, साहित्य की तरह ही उसके नियमन, प्रक्रिया और सम्प्रेषण की विशेषता तथा विशेषज्ञता है। वह एक पृथक अनुशासन है और होना चाहिये। इस बारे में विश्वविद्यालय, अकादमिक विद्वान और पत्रकारिता के अध्येता को मिलकर विमर्श करने और उसे मानवीकी आधार देने की जरूरत और चुनौती है।

****